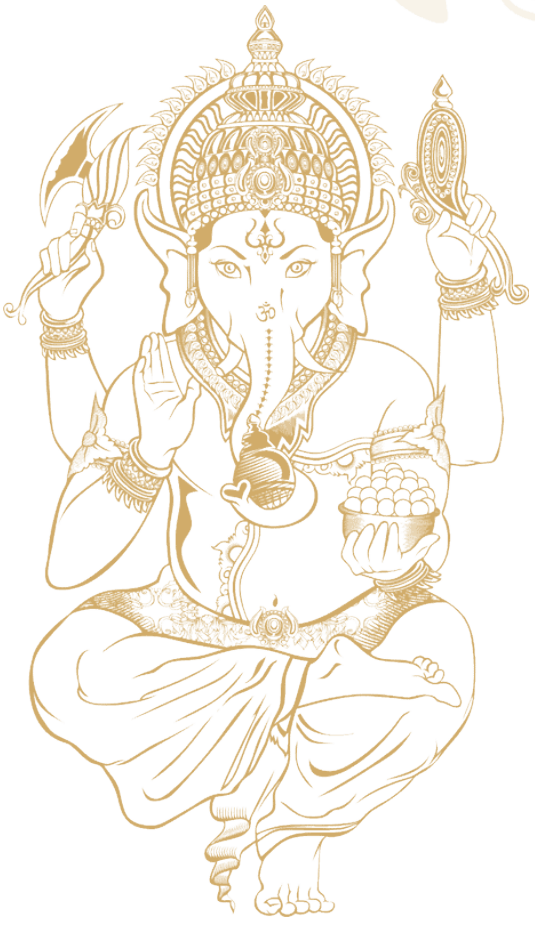

Sandeep

Priya

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121147204

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
1-02/10/1993	जन्म तिथि	16/07/1995
शुक्र-शनिवार	दिन	रविवार
घंटे 03:25:00	जन्म समय	23:15:00 घंटे
घटी 54:00:03	जन्म समय(घटी)	45:05:43 घटी
India	देश	India
Gorakhpur	स्थान	Gwalior
26:45:00 उत्तर	अक्षांश	26:12:00 उत्तर
83:23:00 पूर्व	रेखांश	78:09:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:03:32	स्थानिक संस्कार	-00:17:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:48:58	सूर्योदय	05:34:46
17:41:54	सूर्यास्त	19:11:41
23:46:26	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:51

विंशोत्तरी बुध 3वर्ष 7मा 1दि	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी गुरु 6वर्ष 11मा 3दि
सूर्य	11:59:22	सिंह	लग्न	मीन	17:55:38	बुध
04/05/2024	14:57:17	कन्या	सूर्य	मिथु	29:55:48	19/06/2021
04/05/2030	27:11:10	मीन	चंद्र	कुंभ	27:33:38	20/06/2038
सूर्य 21/08/2024	09:29:10	तुला	मंगल	कन्या	03:28:57	बुध 16/11/2023
चन्द्र 20/02/2025	07:20:16	तुला	बुध	मिथु	17:07:50	केतु 12/11/2024
मंगल 28/06/2025	27:42:26	कन्या	गुरु व	वृश्चि	12:10:18	शुक्र 13/09/2027
राहु 23/05/2026	18:50:10	सिंह	शुक्र	मिथु	20:14:21	सूर्य 20/07/2028
गुरु 11/03/2027	00:25:53	कुंभ व	शनि व	मीन	00:51:53	चन्द्र 19/12/2029
शनि 21/02/2028	10:35:08	वृश्चि व	राहु व	तुला	07:53:05	मंगल 16/12/2030
बुध 27/12/2028	10:35:08	वृष व	केतु व	मेष	07:53:05	राहु 05/07/2033
केतु 04/05/2029	24:27:44	धनु	हर्ष व	मक	04:53:52	गुरु 11/10/2035
शुक्र 04/05/2030	24:36:11	धनु	नेप व	मक	00:22:40	शनि 20/06/2038
	29:55:30	तुला	प्लूटो व	वृश्चि	04:09:39	

लग्न-चलित

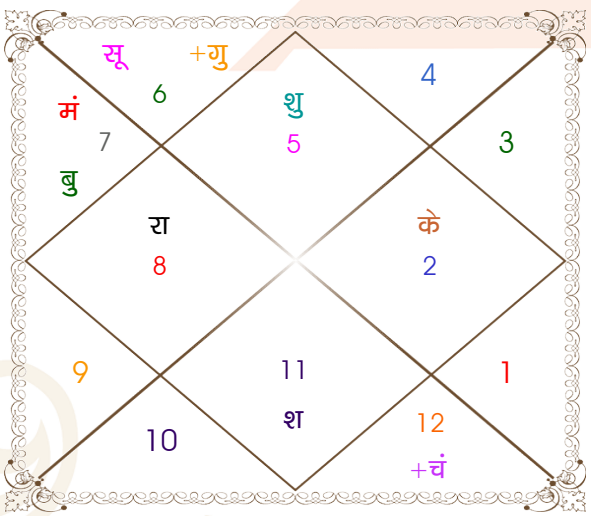

लग्न-चलित

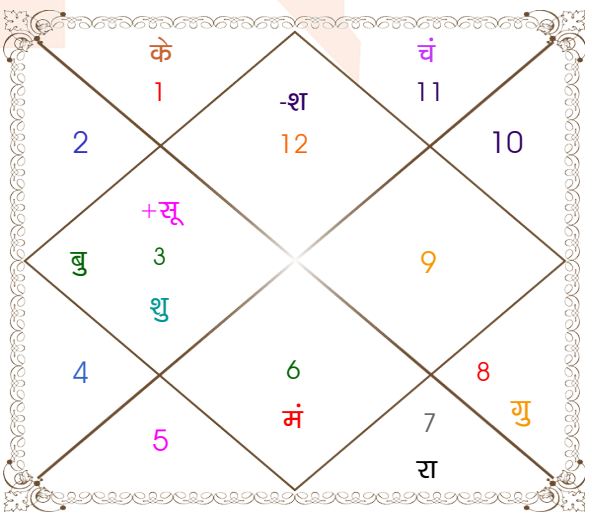

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गज	सिंह	4	0.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शनि	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	कुम्भ	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.50		

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

ैदकममच का वर्ग सिंह है तथा च्तपलं का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसारैदकममच और च्तपलं का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

ैदकममच मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

च्तपलं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनिैदकममच कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगलैदकममच कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष

कट जाता है।

ैदकममच तथा च्तपलं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।